वर्ष

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

24 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड			परीक्षा का माध्यम
HINDI	0	0	1	हिन्दी

[redacted] से मिलाकर लगायें

[redacted]

[redacted] परीक्षार्थी का रोल नम्बर

[redacted]	7	1	1	4	0	5	2	2	—

[redacted]

[redacted]	सात	एक	एक	चार	शून्य	पाँच	दो	दो	—

[redacted]

एक | एक

(परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे)

क - पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में ✗ शब्दों में ✗

ख - परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक ऊपरी गैलरी

ग - परीक्षा का दिनांक 01 | 03 | 2017

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
Shm 3 66	112171

(केन्द्राध्यक्ष/सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
R.K. BHANDEY Reg.No.25309	M.S.PARMAR R.No.15359

(परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे)

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।
प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्ठी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	(अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		9
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक अंकों में

Laser/Inkjet/copier Labels A4SL-24 64 X 34 mm X 24

N. eight 0 9 8

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (01) का उत्तर

(i) वृष्टि

(ii) मैं

(iii) कानपुर

(iv) छब्बीस

(v) वसन

प्रश्न क्रमांक (02) का उत्तर

(i) गातपत्र

(ii) असहमत

(iii) साधु

(iv) सफल न होना

(v) जुगुप्सा

BSE

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक 03 का उत्तर

(अ) भय दो रूपो में हमारे सामने आता है -
(i) साध्य (ii) असाध्य

(ब) विश्वास में विष घोलने का काम सुजान ने किया था।

(स) देशहित पर कविता लिखने पर लेखक रामकुमार वर्मा को डा रू का पुरस्कार प्राप्त हुआ।

(द) मालवी बोली उज्जैन तथा देवास में बोली जाती है।

~~(ई) अन्योक्ति अलं।~~
(ई) जहाँ किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को लक्ष्य में रखकर किसी अन्य से कोई बात कही जाती है वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।

प्रश्न क्रमांक 04 का उत्तर

'क'	'ख'
(अ) मंगलवर्षा	→ भवानी प्रसाद मिश्र।
(ब) तुम यहाँ आओ	→ आज्ञावाचक।
(स) पंचवटी	→ खण्डकाव्य।
(द) रंगोली	→ शिवप्रसाद सिंह।
(ई) छोटे-छोटे सुख	→ रामदरश मिश्र।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSEC ...IONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (05) का उत्तर

(i) सत्य

(ii) सत्य

(iii) असत्य

(iv) असत्य

(v) सत्य

प्रश्न क्रमांक (25) का उत्तर

संकेत - बड़े न - - - - - - - - - न जाय।

सन्दर्भ - प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'स्वाति' हिन्दी विशिष्ट के 'दोहे' नाम पाठ से अवतरित है। इसके रचयिता बिहारी जी है।

प्रसंग - प्रस्तुत ~~(पद्यांश)~~ पद्यांश में कवि बिहारी जी ने बड़प्पन के महत्व को स्पष्ट किया है-

व्याख्या -

प्रस्तुत पद्यांश में बिहारी जी ने कहा है कि बड़े होने के लिए नाममात्र ही काफी नहीं होता है बल्कि उसके लिये उन गुणो का भी होना आवश्यक है। जिस प्रकार धतूरे का एक नाम कनक है लेकिन उससे गहने को नहीं बनाया जा सकता है।

5

अंक

प्रश्न क्र.

(सौन्दर्य) सौन्दर्यानुभूति - (i) कवि ने दोहा छन्द का प्रयोग किया है।
(ii) ब्रज भाषा का प्रयोग किया है।

प्रश्न क्रमांक (24) का उत्तर

संकेत - असल प्रकाश - - - - - - - जा सकता।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक हिन्दी विशिष्ट के 'तिमिर गेह में किरण आचरण' नाम पाठ से अवतरित है। इसके लेखक डॉ श्यामसुन्दर दुबे जी है।

प्रसंग - लेखक कहता है कि व्यक्ति का विवेक, शील एवं चरित्र जिसे छू ले वह प्रकाशित हो उठता है। प्रकाशित व्यक्ति सभी प्रभावित करते है।

व्याख्या -

प्रस्तुत गद्यांश में लेखक ने कहा है कि दिये एवं बिजली के बल्ब का प्रकाश तो केवल आभास है जबकि असली प्रकाश तो हमारे जीवन का प्रकाश है। अर्थात् सृजन का प्रकाश ही असली प्रकाश है। जिस व्यक्ति के सद्गुण, अच्छे विवेक एवं चरित्र तथा ईमानदारी जिसे स्पर्श कर ले वह प्रकाशित हो जाता है। लेखक कहता है कि तिल के समान गेहूँ का बीज भी हमें विकास करने का सन्देश देता है। लेखक कहता की सृजन की यात्रा को हम कभी रोक नही सकते है। हम उसे अँधेरे कमरों में भी बन्द करके नही रोक सकते है। इस प्रकार लेखक ने स्पष्ट किया है कि सृजन की यात्रा निरंतर गतिशील रहती है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

सौन्दर्यानुभूति - (i) लेखक ने शुद्ध साहित्य खड़ी बोली का प्रयोग किया है।
(ii) सृजन सृजन के महत्व को स्पष्ट किया है।

| प्रश्न क्रमांक ~~(26)~~(26) का उत्तर |

(i) ~~शीर्षक - पर्वो का~~

(i) शीर्षक - "पर्वो का महत्व"

(ii) जीवन प्रवाह को ~~सही~~ सही दिशा देने वाले पर्व ही होते हैं।

(iii) सारांश -
भारतीय संस्कृति में पर्व अपना विशेष स्थान रखते हैं। पर्व के माध्यम से हमारी कटुतायें समाप्त हो जाती हैं। पर्व प्रेम और करुणा की सद्भावना को हमारे जीवन में विकास करते हैं।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

| प्रश्न क्रमांक (27) का उत्तर |

प्रति,

श्रीमान सचिव महोदय,

माध्यमिक शिक्षा मण्डल भोपाल

विषय - अंकसूची की द्वितीय प्रति मंगवाने हेतु ।

महोदय,

सेवा में सविनय नम्र निवेदन है कि मैं वर्ष 2015 की हाईस्कूल परीक्षा में एक नियमित छात्र के रूप में सम्मिलित हुआ, जिसकी अंकसूची मुझे प्राप्त हो चुकी थी लेकिन वह कहीं गुम हो गई है। जिससे मुझे शासकीय नौकरी प्राप्त करने में समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

अतः श्रीमान् जी से निवेदन है कि मेरी समस्या को ध्यान में रखते हुये अंकसूची की द्वितीय प्रति भेजने की कृपा करें। जिसके लिए मैंने 200 रुपये का ड्राफ्ट नम्बर 6786 संलग्न किया है जो आपके नाम देय है।

मेरी जानकारी निम्नानुसार है -

(i) नाम - - - - - -

(ii) पिता का नाम - - - - -

(iii) माता का नाम - - - -

(iv) केन्द्र क्रमांक - - - - -

(v) केन्द्र का नाम - - - -

(v) अनुक्रमांक - - - -

लिये गये विषय

(i) हिन्दी

(ii) अंग्रेजी

(iii) भौतिक शास्त्र

(iv) रसायन शास्त्र

(v) गणित

प्रार्थी

अ ब स

पता - ग्राम खरौधा।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

| प्रश्न क्रमांक (28) का उत्तर | (अ)

भारतीय समाज में नारी का स्थान

(1) प्रस्तावना -

स्त्री और पुरुष एक रथ के दो पहिये समान है। जिस प्रकार तार बिना वीणा एवं धुरी के बिना रथ महत्वहीन होते है ठीक उसी प्रकार नारी के बिना पुरुष जीवन अधूरा होता है। नारी सृजन रचना की पूर्णता है। नारी में माता, बहन, दादी, नानी, प्रेयसी आदि जैसे अनेक रूप होते है। सम परिस्थितियों में वह देवी है तो विषम परिस्थितियो में वहीं दुर्गाभवानी बन जाती है। नारी और पुरुष सृष्टि चक्र में एक दूसरे के पूरक है। मैथिलीशरण गुप्त ने लिखा है -

"नारी तुम केवल श्रद्धा हो विश्वास रजत पग-पग तल में।
पीयूष स्रोत सी बहा करो जीवन के सुन्दर समतल में।।"

(2) प्राचीन भारतीय नारी -

प्राचीनकाल में नारियो के लिये कोई भी स्थान वर्जित नही था। वे युद्धभूमि में पुरुषो के समान रणकौशल दिखाया करती थी। कैकयी इसका प्रत्यक्ष उदाहरण है जिन्होने युद्धभूमि में राजा दशरथ को सहयोग प्रदान किया था। इसके अतिरिक्त सीता, अनुसूया एवं सुलोचना आदि आदर्श नारियो ने नारी जगत को एक नवीन दिशा प्रदान की है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(3) मध्यकाल में नारी -

मध्यकाल में आकर नारियों की सामाजिक दशा अत्यन्त दयनीय हो गयी। इस काल के शासकों की कामलोलुप निगाहों से नारी को बचाने के लिए पर्दा प्रथा लागू हुई। इस काल में नारियों को चाहर दीवारी तक सीमित कर दिया गया। इस प्रकार मध्यकाल में आकर शक्ति स्वरूपा नारी 'अबला' बनकर रह गयी। गुप्त जी का मार्मिक कथन प्रस्तुत है -

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखों में पानी॥"

(4) भक्तिकाल एवं रीतिकाल में नारी -

भक्तिकाल में नारी जन जीवन के लिए इतनी उपेक्षित हो गयी कि विद्वान कवि कबीरदास ने उन्हें 'महाविकार' एवं नागिन कहकर घोर निन्दा की। महाकवि तुलसी ने भी नारियों के प्रति सहानुभूति नहीं दिखाई है -

"ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
ये सब ताड़न के अधिकारी॥"

रीतिकाल में आकर नारी भोग विलास की वस्तु बन गयी। इस काल के कवियों ने नारी के नख-शिख तक का वर्णन कर डाला। जैसे -

"झीनें पट में झिलमिली झलकति ओप अपार।
सुर तरु की मनौं सिन्धु में लसति सपल्लव डार॥"

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

(5) वीरांगनाये-

भारतदेश को गुलामी की बेड़ियो से आजाद कराने के लिये झलकारी बाई, महारानी लक्ष्मीबाई जैसी नारियो ने अपने त्याग एवं साहस का परिचय देकर भारत का गौरव बढ़ाया है।

सन् 1857 की क्रान्ति मे महारानी लक्ष्मीबाई ने अंग्रेजो के दाँत खट्टे कर दिये जिसे इतिहास कभी भुला नही सकता है। सुभद्रा कुमारी चौहान ने लिखा है-

"चमक उठी सन् सत्तावन मे वह तलवार पुरानी थी।
बुन्देले हरबोलो के मुँह हमने सुनी कहानी थी॥"

(6) वर्तमान काल में नारी-

आधुनिक काल मे बंगाल के राजा राममोहन राय एवं उत्तर भारत के दयानन्द सरस्वती ने नारी को पुरुषो के अत्याचार से मुक्त कराने के लिये क्रान्ति का बिगुल बजाया है। कवि पंत ने भी नारी की तीव्र स्वर मे स्वतंत्रता की माँग की है-

"मुक्त करो नारी को मानव चिर वन्दनीय नारी को।
युग-युग की निर्मम कारा से जननी सखि प्यारी को॥"

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(7) उपसंहार -

आज भारतदेश के प्रगति के हर क्षेत्र मे नारियाँ पुरुषो के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आगे बढ़ रही है। एक तरफ हमारी बेटियाँ ओलम्पिक मे स्वर्ण पदक जीतकर आ रही है, तो दूसरी तरफ हमारे समाज के कुछ असामाजिक तत्व उनके विकास मे बाधा बने हुये है। इसमे हमे एवं शासन को मिलकर नारी शक्ति को बढ़ाने के लिए इन बुरे तत्वो की जड़ो को काट फेंकना होगा तभी यह कहावत सत्य होगी -

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता।"

प्रश्न क्रमांक 24 का उत्तर (ब)

राष्ट्रीय एकता

(i) प्रस्तावना।
(ii) राष्ट्रीय एकता मे बाधक तत्व।
(iii) साम्प्रदायिकता।
(iv) राष्ट्रीय एकता के पोषक तत्व।
(v) राष्ट्रीय एकता की आवश्यकता।
(vi) देशहित के प्रति समर्पण।
(vii) राष्ट्रीय एकता के परिणाम।
(viii) उपसंहार।

BSE

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 06 का उत्तर

भक्तिकाल के ज्ञानमार्गी शाखा के विद्वान कवि कबीर दास जी कहते है कि शब्द का कोई आकार नही होता है। बोलते समय हमें अपने शब्द ध्यान देना चाहिये क्योकि एक तरफ हमारे मधुर वचन किसी के औषधि का कार्य करते है, तो कड़वे वचन हृदय मे घाव कर जाते है।

प्रश्न क्रमांक (07) का उत्तर

धरती मानव है तो वसंत मानवता है। यही दोनो का आपसी नाता है।

प्रश्न क्रमांक (08) का उत्तर

कवि वीरेन्द्र मिश्र ने अपनी कविता में देशज मित्रों, श्रमव्रतिओं, नवयुवको, ग्रह-नक्षत्रों एवं आम जनता से भारतवर्ष की भारतमाता की जय-जयकार का आह्वान किया है।

प्रश्न क्रमांक (09) का उत्तर

मीरा को हरि से मिलने मे निम्नलिखित कठिनाईयाँ उत्पन्न हो रही है -

(i) मीरा के चारो मार्ग (कर्म, ज्ञान, भक्ति, वैराग्य) बन्द हो चुके है।

~~मीरा का महल इतना~~

(ii) मीरा के स्वामी का महल इतना ऊँचा है कि वे वहाँ तक चढ़ने में असमर्थ है।

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (10) का उत्तर

विभावरी के बीतने पर ऊषा नागरी तारे रूपी घड़े घटो को अम्बर रूपी पनघट में डुबो रही है। कवि ने इस दृश्य को मानवीयकरण अलंकार से सजाया है।

प्रश्न क्रमांक (11) का उत्तर

नये मेहमान एकांकी में रेवती गृहस्वामिनी का प्रतिनिधित्व करती है। उसके चरित्र की प्रमुख विशेषताये निम्न लिखित है-

(i) आधुनिक ग्रहणी -
रेवती मध्यमवर्गीय परिवार की नारी का यथार्थ रूप है। आधुनिक ग्रहणी के समस्त लक्षण उसमे विद्यमान है।

(ii) पारिवारिक समस्याओ से दुःखी -
रेवती का बच्चा बीमार है क्योंकि भीषण गर्मी पड़ रही है। वह पारिवारिक समस्याओ से दुःखी होकर कहती है कि न जाने कब तक इस जेलखाने मे सड़ना होगा?

प्रश्न क्रमांक -12 का उत्तर

गम्भीरता के बिना अध्यक्षता हो ही नही सकती है। इसलिए अध्यक्ष को मनहूस सूरत बनाकर बैठना पड़ता है। अच्छे अध्यक्ष की पहली शर्त है - गम्भीरता एवं मनहूस सूरत।

BSE

पूर्व पृष्ठ पृष्ठ कुल

मध्यप्रदेश

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESH

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (13) का उत्तर

उत्तर गोग्रहण के समय अर्जुन ने अकेले ही सूर्यवीर करण भीष्मपितामाह एवं गुरु द्रोणाचार्य के दाँत खट्टे कर दिये थे।

प्रश्न क्रमांक (14) का उत्तर

देवकी की गोद में क्षीर सागर मचल रहा था।

प्रश्न क्रमांक (15) का उत्तर

(अ) अपने मुँह मिया मिट्ठू बनना - स्वयं अपनी प्रशंसा करना
प्रयोग - रमेश प्रत्येक काम में अपने मुँह मिया मिट्ठू बनने की कोशिश करता है।

(ब) दाँत खट्टे करना - पराजित करना
प्रयोग -
रानी लक्ष्मी बाई ने 1857 की क्रान्ति में अंग्रेजो के दाँत खट्टे कर दिये थे।

प्रश्न क्रमांक (16) का उत्तर

वात्सल्य रस -
जहाँ किसी वर्णन में किसी छोटे बालक के प्रति जो प्रेम व्यक्त किया जाता है, वहाँ वात्सल्य रस की निष्पत्ति होती है।

BSE

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक-17

सम्पूर्ण विश्व मे केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ पशु पक्षी से लेकर पत्थर भी पूजे जाते है। हमारे बुजुर्ग चीटियो एवं पक्षियो को आटा डालना नही भूलते है। हिन्दू धर्म मे गाय को माता संज्ञा प्राप्त है तथा हमारे आराध्य श्रीकृष्ण को भी गाय अत्यधिक प्रिय थी। प्रस्तुत रेखाचित्र मे लेखिका महादेवी वर्मा अपनी पालतू गाय की अचानक मर्मस्पर्शी पीड़ा को सहन नही कर पाती है और उनके मुँह निकल पड़ता है-

"आह मेरा गोपालक देश।"

लेखिका को दो देशो के हत्यारे पर काफी रोष आता है एवं उनका हृदय करुणा एवं वेदना से भर जाता है।

प्रश्न क्रमांक-18

विभावना अलंकार -

जहाँ किसी वर्णन में कारण के उपस्थित न होने पर भी कार्य सम्पन्न हो तो वहाँ विभावना अलंकार होता है।

उदाहरण -

"बिनु पद चले सुने बिनु काना।
कर बिनु करम करे विधिनाना।।
आनन रहित सकल रस भोगी।
बिनु बाणी बकता बड़ जोगी।।"

B S E

[ ] + [ ] = [ ]

पृष्ठ पृष्ठ 1 अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक - 19

भाषा और बोली में प्रमुख अन्तर निम्नलिखित है -

भाषा	बोली
(i) भाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है।	बोली का क्षेत्र सीमित होता है।
(ii) भाषा सम्पूर्ण राष्ट्र मे बोली जाती है।	बोली का किसी क्षेत्र विशेष मे होता है।
(iii) भाषा का व्याकरण होता है।	बोली का व्याकरण नही होता है।
(iv) भाषा का प्रयोग साहित्य लेखन मे किया जाता है।	बोली का प्रयोग साहित्य लेखन मे नही किया जाता है।

प्र

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्रमांक (20) का उत्तर

छायावाद
छायावाद की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित है -

(i) व्यक्तिवाद की प्रधानता -
छायावादी कविताओं में कवियों की निजी सुख दुःख की अभिव्यंजना है। जैसे -

"मैंने मैं शैली अपनायी, देखा एक दुःखी निज भाई।
दुःख छाया पड़ी हृदय पर, झट उमड़ वेदना आई।।"

(ii) प्रेम और सौन्दर्य -
छायावादी कवियों ने नारी सौन्दर्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य का मनोरम वर्णन किया है। वह पार्थिव जगत स्थूल नारी न होकर भाव जगत देवी बन गई।

नील परिधान बीच सुकुमार खुला रहा मृदुल अधखुला अंग।"

(iii) करुणा और वेदना -
छायावादी कविताओं में करुणा और वेदना के भाव देखने को मिलते है। महादेवी वर्मा ने लिखा है -

"मैं नीर भरी दुःख की बदली। परि
परिचय इतना इतिहास यही, उमड़ी कल थी मिट आज चली।।"

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्र.

(iv) रहस्यवादिता –

छायावादी कवियों ने ईश्वर को रहस्य मानकर उनसे मिलने के लिए अश्रुधारा बहाई है। महादेवी वर्मा ने लिखा है –

"बीन भी हूँ मैं तुम्हारी, रागिनी भी हूँ।
दूर तुमसे हूँ अखण्ड सुहागिनी भी हूँ॥"

प्रश्न क्रमांक (21) का उत्तर

कहानी एवं उपन्यास में प्रमुख अन्तर निम्न लिखित हैं –

कहानी	उपन्यास
(i) कहानी में मानव जीवन की एक प्रभावशाली घटना का वर्णन होता है।	उपन्यास में मानव जीवन के वृहत स्वरूप का वर्णन किया जाता है।
नी का आकार छोटा होता	उपन्यास का आकार दीर्घ होता है।
(iii) कहानी में पात्रों की संख्या कम होती है।	उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होती है।
(iv) कहानी में अंत तक जिज्ञासा बनी रहती है।	उपन्यास में जिज्ञासा कम होती है।
(v) कहानी की भाषा चुटीली होनी चाहिए।	उपन्यास की भाषा भावात्मक एवं विचारात्मक होनी चाहिए।

BSE

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL

प्रश्न क्रमांक (22) का उत्तर

तुलसीदास

(अ) रचनायें - आपकी प्रमुख रचनायें निम्न लिखित है -
(i) रामचरित मानस ।
(ii) कवितावली ।
(iii) पार्वती मंगल ।

भावपक्ष - भक्तिकाल के सगुण भक्ति धारा के विद्वान कवि तुलसीदास कवि के साथ-साथ एक समाज सुधारक भी थे । भगवान राम से आपने दास्य अथवा सेवक की भक्तिभावना का रिश्ता जोड़कर इस भव सागर से उद्धार के लिए निवेदन किया है। भगवान राम उनके लिए एक मात्र बल और विश्वास है। उन्होंने लिखा है -

"एक भरोसो एक बल एक आस बिसास ।
एक राम घनश्याम हित चातक तुलसीदास ।।"

कलापक्ष -

आपने अपने काव्य में अवधी भाषा का प्रयोग किया है। तुलसी दास द्वारा रचित रामचरित मानस का अक्षयकीर्ति का भण्डार है। आपने अपने काव्य मे दोहा, कवित्त, सवैया एवं मत्तगयंद आदि छन्दो को अपनाया है। आपके काव्य में नौ रसो का संगम है एवं अलंकारो की छटा बिखरी पड़ी है।

साहित्य मे स्थान - तुलसीदास को समस्त विश्व महाकवि के रूप मे स्वीकार कर रहा है। तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस युगो-युगो तक समाज का पथ प्रदर्शक एवं तुलसी के सर्वोच्च ज्ञान की प्रतिभा को आलोकित करता रहेगा। हिन्दी साहित्य मे आपको 'शशि' की उपमा प्रदान की गई है।

BSE

अंक
BOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSEC
मध्यप्रदेश

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रमांक (23) का उत्तर

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

रचनायें - आपकी प्रमुख रचनायें निम्नलिखित है -

(i) चिन्तामणि भाग - 1, 2 ।

(ii) हिन्दी साहित्य का इतिहास ।

(iii) बुद्धचरित ।

भाषाशैली -

शुक्ल जी की भाषा शुद्ध साहित्यिक परिमार्जित खड़ी बोली है। आपकी रचनाओं में व्यर्थ का शब्दाडम्बर देखने को नहीं मिलता है। आपके साहित्य में संस्कृत के तत्सम शब्दों की बाहुलता है। आपने विदेशी भाषा के शब्दों के प्रयोग से भी परहेज नहीं किया है। मुहावरे एवं लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा सरल एवं सुबोध बन गई है। कहीं-कहीं तो आपकी भाषा सूक्तिमय बन गयी है जैसे -

"बैर क्रोध का अचार या मुरब्बा है।"

शुक्ल जी भाव शैली के धनी कवि माने जाते है। आपने भावात्मक, विचारात्मक, वर्णनात्मक आदि शैलियों का जमकर प्रयोग किया है। शैलियों की विविधता आपकी प्रमुख विशेषता है। सूत्रात्मक शैली के आप प्रणेता माने जाते है।

B
S
E

SECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATIONMADHYAPRADESHBHOPAL
प्रश्न क्र.

साहित्य मे स्थान -

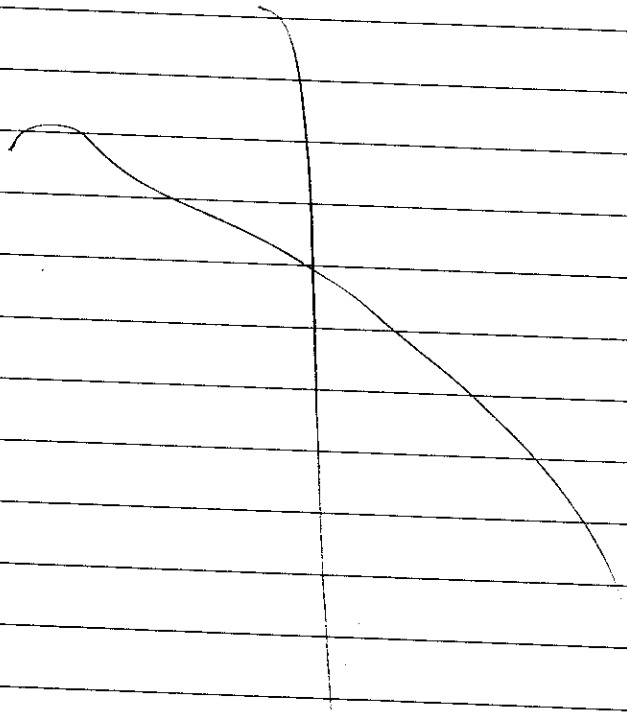

हिन्दी साहित्य मे आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी का मूर्धन्य स्थान है। आप जैसा समर्थ गद्यकार हिन्दी साहित्य मे दुर्लभ है। शुक्ल जी ने हिन्दी साहित्य की विविध विधाओ पर अपनी लेखनी चलाई है। साहित्य के जिस क्षेत्र को भी आपने स्पर्श किया उसे अपनी पारस प्रतिभा से कंचन बना दिया।